व्याकरण कर दरकार आउर परंपरा

हर देस में भासा कर तीन रुप भेटायला बोली, परिनिष्ठत भाषा आउर राष्ट्रभाषा जोन स्थानीय बोली कर प्रयोग आम आदमी आपन समूह इया घर में करेला, बोली कहायला। कोनवे देस में कय ठो बोली बोलल जायला। हामरे कर देस में बोली कर संख्या ढेइर बगरा हय।

भासा चाहे 'जनभाषा' होवे चाहे 'राष्ट्रभाषा', कम बोलवइया होवँय इया बगरा, जोन भासा कर व्याकरन नी होवे ऊ सही माने में भासा कर रुप लेवे नी पारे।

भासा कर पहिल रुप बोली होवेला उके भासा कर दरजा तब तक नि देल जाय सकेला जब तक कि उके व्याकरन से बांधल नि जाय। भासा के व्याकरन अनुसासित राखेला, उकर रुप के थीर राखेला, संगहे दोसर भासा-भासी मन ले भासा के जानेक माध्यम बनेला। भासा बेयापकता पाय लेवेला तभे आगे जाय के राजनीतिक आउर सामाजिक सकति कर आधार पाय के 'राजभाषा' इया 'राष्ट्रभाषा' कर ठाँव पावेला।

परचलित (प्रचलित) व्याकरन में फादर पीटर शान्ति नदंरगी कर “नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण” (1965 ई.), पंडित योगेन्द्र नाथ तिवारी कर “नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय (1976 ई.) आउर डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी करश शोध-प्रबन्ध कर व्याकरन वाला भाग ‘नागपुरी भाषा” - एखन कर मुध व्याकरन किताब कर रूप में मिलेला। अब एहो किताब मन उपलब्ध नखँय। जब ई व्याकरन मन लिखाय रहँय से बेरा नागपुरी भासा के सही ठाँव आउर उकर माइन दिवायक खातिर भासा प्रेमी, नागपुरी सेवी भागीरथी परयास करेक में लागल रहँय। ऊ समय इसन रहे कि व्याकरन से बगरा जरुरी भासा कर अस्तित्व के बचायक दरकार रहे। एतने नइ नागपुरी भासा जेके सदान (गैर आदिवासी) मन बोलयेंना ओहे मनक ‘प्राचीनता’ उपरे सवाल खड़ा होत रहे। फा. नवरंगी होवॅय कि पं. योगेन्द्र नाथ तिवारी सउब सदान मनक बारे में आपन बिचार राखलँय आउर इमन के ई

ठाँव कर मूल निवासी आउर उमनक भासा के पुरना आउर स्वतंत्र भासा साबित करलँय।

नागपुरी में सधारन रूप से ण,श,षं, क्ष, त्र, ज्ञ मनक बेवहार नि करल जायला। मुदा तेउ में दरकार मोताबिक ण, श, क्ष, त्र, ज्ञ कर परयोग करल जाय हे जेकर से जोन भासा से ई सबद मन लेवल जाय हँय उमनक मौलिकता बनल रहे।

इकर में नागपुरी कर मानक रुप कर धेयान राखल जायहे। जोन रुप कर बेसी बोलवइया हँय ऊ रुप के लेल जायहे मुदा नागपुरी कर आउर दोसरो रुप मन कर धेयान राखल जायहे।

संसार कर हर भासा नियम कानून से बंधाल रहेला। व्याकरण माने वि+आ+करण व्याकरण माने बेस से सोचेक, समझेक, समझायक। भासा कर वैज्ञानिक गेयान पावेक ले व्याकरन जरुरी होवेला। नागपुरी झारखंड कर मुध आउर, सम्पर्क भासा हेके। ई गोटेक स्वतंत्र भासा

हेके। इकर आपन लोक आउर शिष्ट साहित हय। हिन्दी कर व्याकरन लखे इकरो व्याकरन सउब से पहिले अंग्रेजिये में लिखालक।

एखन तक छपल व्याकरन मन में हँय -

1. आन दि गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा, छोटानागपुर- व. ई. एच. हिटली 1896, लिपि-रोमन

2. ऑफ दि नागपुरिया सदानी लैंग्वेज-रेव. कोनार्ड बुकाउट - 1906 (1914) - प्रकाशित

3.नोट्स आन दि नागपुरिया हिन्दी- रेव. ई. एच. हिटली (1914ई.)

4.लैंग्वेज हैण्ड बुक सदानी-रेव. फादर हेनरिक फ्लोर- (1931ई.)

5. ए सिम्पल सदानी ग्रामर-फादर पी. एस. नवरंगी (अंग्रेजी)1956.

6.नागपुरी भाषा और साहित्य-प्रो. केशरी कुमार (1959 ई.)

7.नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण-फा. पी. एस. नवंरगी (1965 ई.)

8. नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय-पंडित योगेन्द्र नाथ तिवारी- (1971 ई.)

9. नागपुरी भाषा -डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी (1976 ई.)

ई किताब मनक अलावे आदिवासी पत्रिका में (1976-77 ई.) मनोहर मिंज कर लिखल दरपुरवा व्याकरन मिलेला। इसने संत कुमार पाण्डेय कर राँची एक्सप्रेस (1987 ई.) में नागपुरी व्याकरन कर कुछ अंस आउर डॉ. गिरिधारी राम गौंझू कर 'नागपुरी सीखू सिरसक से रांची एक्सप्रेस में व्याकरन से सम्बन्धित सामग्री कर प्रकाशन होलक।

ई व्याकरन किताब मन आब दुर्लभ होय गेलक। दोहराय के कोनो व्याकरन कर 'मुद्रण-प्रकाशन' नी होलक।

पं. मृत्युजय नाथ शर्मा कर हस्त लिखल बेयाकरन हय मुदा इकर से बेयाकरन कर परम्परा तो मजगुत होवेला मुदा प्रकाशित नी होवेक चलते एखन के दरकार केर

ई पूरा नि करे। सार रूप में कहल जाय सकेला कि नागपुरी भासा में बेयाकरन कर पुरना आउर मजगुत परम्परा हय मुदा सउब कर पाछे एगो मुध उदेस्य भेटायला जे समय कर हिसाब से जरुरियो रहे। कम से कम आधार रूप में इमनक महत्व के केउ कम नी कइह सकेला। इकर से एहे साबित होवेला कि नागपुरी जीवन्त भासा रहे, हय,

आउर रही तभे इकर में बेयाकरन कर एतना पुरना आउर मजगुत इतिहास भेटायला संगहे ई भासा कर महत्वो के बतायला।